Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 7, Issue - 12, December - 2024

DOIs:10.2018/SS/202412005 --:-- Research Paper / Article / Review

"छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा का वर्तमान स्वरूप"

डॉ. यशवंत कुमार साव
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महाविद्यालय अरमारीकला, जिला-बालोद, (छ.ग.)
EMail - yashwantsao@gmail.com

सारांश : छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य ग्राम्य वातावरण में अंकुरित और विकसित हुए हैं| इस प्रकार के नाटकों में रंगमंचीय शास्त्रीयता नहीं, इनमें अभिनय की सरलता एवं आडंबरहीनता मिलती है|आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक को परिभाषित करते हुए लिखा है-"लोक शब्द का अर्थ 'जनपद' या 'ग्राम्य' नहीं है, बल्कि नगरों और गांवों में फैली हुई वह समूची जनता है, जिंकव व्यावहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है| ये लोग नगर में परिष्कृत रूचि सम्पन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रूचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएं आवश्यक होती है उसको उत्पन्न करते हैं|"1 इस प्रकार लोक का अर्थ पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ सहज- सरल जीवन जीने वाले लोगों से कर सकते हैं| छत्तीसगढ़ की अपनी विशिष्ट लोक संस्कृति हैं, यहाँ के लोक नृत्य, लोकगीत, लोकपर्व, लोककला, लोक साहित्य की अपनी एक अलग पहचान है| यहाँ के लोक जीवन में पारंपरिक रीति-रिवाजों, परंपरा, मान्यता का विशेष स्थान है| छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश लोगों का जीवन कृषि पर आधारित है, जो फसल अच्छी होने पर खुशी से झूमने लगता है, गीत गाता है, नृत्य करता है और पर्व मनाता है |

बीज शब्दः छत्तीसगढ़, लोकनाट्य, नाचा, गम्मत, जोक्कड़, परी |

नाचा- छत्तीसगढ़ की लोक संस्कृति में मनोरंजन एवं सामाजिक संदेश देने के लिए लोक नाट्य की परंपरा है| यहाँ गम्मत, नाचा, रहस, स्वांग जैसे लोक नाट्य के माध्यम से लोक का मनोरंजन किया जाता है| नाचा छत्तीसगढ़ के मैदानी भाग में विकसित एक हास्य प्रधान नाट्य विधा है| नाचा के कलाकार गम्मत के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को दर्शक के समक्ष प्रस्तुत कर उसका समाधान छत है| सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य करता है| निरंजन महावार के अनुसार-"नाचा अपने में एक सम्पूर्ण नाट्य शैली है जबकि गम्मत उसका एक हास्य प्रधान प्रहसन स्वरूप, जो नाचा का पूरक है, इन प्रहास्यनों में कटाक्ष, कटुतामुक्त, व्यंग्य एवं विनोदपूर्ण टिप्पणियाँ की जाती है|"2 नाचा में प्रारंभ में दो 'जोक्कड़' का आगमन होता है| इसे संस्कृत नाटकों का विदूषक भी कह सकते हैं| जोक्कड़ रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर विचित्र स्वरूप बना लेता है, इसका मुख्य कार्य हास-परिहास करना होता है| दोनों जोक्कड़ मंच पर आपस में विचित्र बातें करके लोगों का मनोरंजन करता है| इसके साथ ही मंच पर कांसे का लोटा लेकर परी का आगमन होता है जो गीत गाकर नृत्य करती है| ये परी पात्र पुरुष ही होते हैं जो पारंपरिक छत्तीसगढ़ी परिधान लुगरा, पोलका, आभूषण में गले में पुतरी, कलाई मे चूड़ियाँ, बाजू में नागमोरी, पाँव में घुँघरू पहनते हैं| परी विभिन्न प्रकार के गीत गाकर नृत्य करलोगों का मनोरंजन करते हैं| संगीत के कलाकार ढोलक, तबला, हारमोनियम, बेंजो, मंजीरा आदि वाद्य यंत्रों का प्रयोग करते हैं| नाचा में पारी के साथ 'जोक्कड़' का आगमन होता है| इसे संस्कृत नाटकों का विदूषक भी कह सकते हैं जोककड़ रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर विचित्र स्वरूप बना लेता है, इसका मुख्य कार्य बेच बेचह में लोगों को हसने का होता है |इसके बाद गम्मत प्रस्तुत किया जाता है| नाचा देर रात्रि से लेकर सुबह तक चलता है जिसमें प्रायः तीन गम्मत का मंचन होता है| नाचा के गम्मत विभिन्न विषयों से सम्बद्ध रहते हैं, जिसमे पारिवारिक समस्याओं, सामाजिक समस्याओं, पूँजीपतियों द्वारा शोषण, राजनीतिक पतन से संबंधित हो सकते हैं| नाचा के के कलाकारों के पास कोई लिखित संवाद नहीं होता| वे तात्कालिक प्रत्युत्पन्नमति देश-काल एवं

परिस्थिति के अनुसार अपने संवादों में परिवर्तन कर लेते हैं| ग्रामीण क्षेत्रों में जिस गाँव में नाचा का मंचन किया जाना है, नाचा के कलकार उस गाँव के लोगों का नाम पता कर अपने पत्रों का नाम रख लेते है| इससे दर्शक गम्मत में और अधिक रूचि लेते हैं|

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, जो जीवित उसमें निश्चित रूप से कोई न कोई परिवर्तन अवश्य होगा| लोक नाट्य नाचा भी आधुनिक युग में अपने को समयानुकूल परिवर्तन कर जनमानस के समक्ष दृढ़ता से खड़ा हुआ है| आज वैज्ञानिक युग में मनोरंजम अनेक साधन हैं किन्तु नाचा के प्रति लोक की दीवानगी आज भी ग्रामीण अंचलों में देखने को मिलती है| दूरदर्शन आदि में क्रिकेट, फुटबॉल आदि के मुकाबलों का सजीव प्रसारण होने के बाद भी लोग जिस प्रकार मैच देखने स्टेडियम तक पहुँचने के लिए टिकट कहरिड़कर कड़ी मशक्कत करते हैं, वैसा ही लोक जीवन में आज भी लोग नाचा देखने के लिए पहले से पहुंचकर अपना स्थान सुरक्षित कर लेते हैं| आधुनिकता के प्रभाव से नाचा भी अनछुआ नहीं है उसके भी मंच, पात्र, प्रकाश, संगीत, वेशभूषा और गम्मत के विषय में परिवर्तन हुआ है|

लोक मंच- नाचा अपने आरंभिक समय में 'खड़े साज' के नाम से जाना जाता था| जिसमें छः-सात कलाकार किसी भी खुले चौकोर स्थान पर जहां दर्शक आराम से बैठ सके प्रस्तुति होती थी| नवल शुक्ल के अनुसार "नाचा का पारंपरिक रंगमंच जमीन का टुकड़ा हुआ करता था| कानों-कान यह बात फैल जाती थी कि अमुक दिन नाचा होने वाला है| निश्चित दिन शाम होते-होते दर्शक, नाचा होने की निश्चित जगह पर पुआल, चटाई,या कपड़ा बिछाकर अपने बैठने के लिए जगह सुरक्षित कर अपने-अपने घर लौट जाते थे| नाचा का यह रंगमंच, जो जमीन का टुकड़ा हुआ था, वह धीरे-धीरे अपना स्वरूप बदलता गया| सबसे पहले जमीन के उस टुकड़े को अलग दिखाने के लिए चारों ओर से लकड़ी का खंबा गाड़ दिया गया| फिर खंबों के ऊपर टाट-चटाई से छत बनाई गई, इसके बाद मंच के साथ माईक, लाउडस्पीकर, गैस बत्ती, जनरेटर आदि जुडते चले गए|"3 कुछ गिने-चुने लोक कलाकारों के माध्यम से प्रस्तुत होने वाला नाचा आज बड़े-बड़े मंचों पर आधुनिक चमक-दमक के साथ प्रस्तुत हो रहा है|

प्रकाश योजना- पर्व एवं आनंद के अवसर पर पहले नाचा मे दो चिकरिहा, एक तबलची, दो मंजिरहा, एक मशालची, दो जोक्कड़ एवं तीन नचकारीन के साथ नृत्य, गीत के माध्यम से रात भर मनोरंजन करते थे| मशालची का मुख्य कार्य मंच पर प्रकाश व्यवस्था करना था| इसके बाद मशाल के स्थान पर गैसबत्ती (पेट्रोमैक्स) का प्रयोग होने लगा| वर्तमान समय में मंच पर पर्याप्त विद्युत व्यवस्था रहती है| रंगीन प्रकाश का भी उपयोग किया जाता है|

वेशभूषा एवं साज-सज्जा- पहले नाचा के कलाकार मुरदाल शंख, कुमकुम, अभ्रक, काजल, छुई, कोयला, गेरू ऐसे सस्ते एवं सहज रूप से अपनी साज-सज्जा करते थे| वेशभूषा भी पारंपरिक होता था| आज वेशभूषा में भी परिवर्तन आया| अब ज्यादा आकर्षक वेशभूषा धरण करने लगे हैं साथ ही साज-सज्जा में परंपरा के साथ आधुनिकता का समावेश हुआ है|

पात्र- गोरेलाल चंदेल के अनुसार "लोक के मध्य से अनुभवी, मंचीय लोक कलाकार जन समूह के साथ नाचता भी है, गाता भी है और अभिनय भी करता है| न कोई विशिष्ट और न कोई सामान्य होता है| अर्थात् न कोई कला मर्मज्ञ होता है, न ही कोई कला शून्य| छोटे-छोटे पात्र भी जन-जन के विविध सामान्य चरित्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं|" नाचा में प्रारंभिक पात्र जोक्कड़ और परी अर्थात नचकारीन की मुख्य भूमिका होती है| गम्मत के स्त्री पत्रों की भूमिका भी पुरुष ही निभाते थे किन्तु आजकल नाचा में कहीं-कहीं महिलाओं को भी अभिनय करते देखा जा सकता है|

कथावास्तु- नाचा में गम्मत के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक समस्याओं भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार, छुआछूत, दहेज़ प्रथा, बालविवाह, नशा आदि को को अत्यंत ही प्रभावी ढंग से लोक कलाकार दर्शक के समक्ष प्रस्तुत करता है| "सामाजिक कुरीतियों पर विषमता, छुआछूत पर ढोंग पाखंड पर शोषण और राजनीति के दोहरे चरित्र पर तीखी चोट करने की नाचा कलाकारों की क्षमता तो केवल नाचा देखकर समझा जा सकता है| उनकी प्रस्तुतियों की विषयगत विविधता, व्यापकता और गहराई को देखकर यह कहना गलत न होगा कि नाचा विषयवस्तु को गहरी सूक्ष्मता के साथ पकड़कर उसे व्यंग्य और हास्य से पैना बनाकर समाज के गतिशील यथार्थ का रेखांकन करता है|"5 वर्तमान समय में नाचा में समाज की तत्कालीन समस्याओं का चित्रण कर समाधान के लिए उपाय भी प्रस्तुत किया जाता है|

वाद्ययंत्र- नाचा में पहले चिकारा**,** मंजीरा, तबला वाद्य का प्रयोग करते थे किन्तु वर्तमान में आधुनिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है|

निष्कर्ष- नाचा के वर्तमान स्वरुप को देखने से यह स्पष्ट होता है कि नाचा के प्रारंभिक और वर्तमान स्वरुप में परिवर्तन आया है| मंच, वाद्य यंत्र, प्रकाश व्यवस्था के साथ कथावस्तु में भी समयानुकूल परिवर्तन आया है| नाचा का यह परिवर्तन सकारात्मक है क्योंकि नाचा का मुख्य उद्देश्य लोक का मनोरंजन के साथ सामाजिक समस्याओं का गम्मत के माध्यम से चित्रण करना है जिसमें आज का लोकनाट्य नाचा खरे उतरता है| नाचा ने आधुनिकता को शरीर के वस्त्र-आभूषण के सामान अवश्य अपनाया है किन्तु आत्मा लोक परंपरा की है| नाचा के पारंपरिक रीति-रिवाज आज भी मोजूद हैं| कथावस्तु में समय के साथ परिवर्तन अपरिहार्य है| लोक की समस्याएँ युगानुरूप बदल जाती हैं| लोक का कलाकार भी इस बदलाव को तत्काल अपने गम्मत में शामिल कर लेता है उस पर चिंतन करने लोगों को विवश कर देता है और अंत में समस्या का एक समाधान भी प्रस्तुत करता है|

संदर्भ सूची-

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, 'जनपद' अंक-1, पृ.-65
2. महावार, निरंजन, नाचा, नाटक के सौ बरस, पृ.-235
3. शुक्ल, नवल, चौमासा, अंक-16, फरवरी-जून, 1988
4. चंदेल, गोरेलाल, विचारवीथी, लोक की समूहवादी चेतना और राउत नाचा, 22मई 2014
5. अग्रवाल, महावीर, लोक संस्कृति के आयाम एवं परिप्रेक्ष्य, पृ.-146